शैलेश मटियानी के कहानी साहित्य में दलित बोध

प्रा. डॉ. शरद बाबाणी शिरोडकर हिंदी विभाग प्रमुख गोगटे - वाळके कॉलेज बांदा, पानवळ

तालुका – सावंतवाडी जिल्हा – सिंधुदुर्ग, महाराष्ट्र

Mobile No: - 9422373917 Email id-sharad.shirodkar10@gmail.com

---

प्रस्तावना:

शैलेश मटियानी जी एक ऐसे कहानीकार हैं जिन्होंने समाज में होनेवाले हर वर्ग के शोषण का बड़े ही सटिक एवं अध्ययन पूर्ण विवेचन किया है। इन्होंने समाज में व्याप्त इस विषमता को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर करने की कोशिश की है। लेकिन यह कहाँ तक सफल हो पाये हैं, यह कहना असम्भव है। इनकी भावनाएँ सामाजिक है व्यक्तिगत नहीं। यह स्त्री वर्ग का शोषण, गरीबी, अनाचारा, मजदूर-कृषक वर्ग का शोषण, मध्यम वर्ग की दुर्दशा, श्रमिकों एवं बाल वर्ग का शोषण आदि को देखकर व्यथित हो उठते थे। इन्होंने पूँजीवाद को भी आम आदमी की पीड़ा और सामाजिक विषमता के लिए उत्तरदायी माना है। जिस तरह से कवियों के काव्य में पूँजीवाद के प्रति आक्रोश, घृणा एवं भत्सना की सीमा पर पहुँच जाता है, उसी प्रकार इन्होंने भी अपनी कहानियों और उपन्यासों में उच्च वर्ग के प्रति आक्रोष, घृणा एवं भत्सनाको सीमा तक पहुँच दिया है। शोषक, शोषित एवं शासक वर्ग, जाति-धर्म आदि के नाम पर आम आदमी को पीडा ही देता आ रहा है। शैलेश जी स्त्री को देवी नहीं मान सके हैं क्योंकि इन्होंने स्त्री के यथार्थ शोषित रूप को ही देखा है। इसकी पारिवारिक स्थिति सामाजिक स्थिति से इन्होंने क्षोभ है और उसकी दुरावस्था को इन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में उभारा है।

दलित जीवन का यथार्थ बोध:

उच्चवर्ग के विरोध में शैलेश जी अत्याधिक सक्रिय रहे हैं। इन्होंने इनके पाखण्डों पर तीखे व्यंग्य, प्रहार किया है और उसके मानवीय शोषण के कारण अन्य वर्गो में उत्पन्न संत्रास, वितृष्णा, आक्रोश आदि की संवेदनाओं की सशक्त अभिव्यक्ति की है। इनकी अधिकांश कहानियों में संघर्षजन्य एवं शोषण के विरोध में उत्पन्न होनेवाली संवेदनाएँ दिखाई देती हैं। इन्होंने अपनी कहानियों में सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक क्षेत्रों की उन समूची स्थितियों को भी पूण यथार्थ के साथ उभारा है जिससे आदमी का जीवन प्रभावित हो जाता है।

ग्रामीण जीवन से लेकर महानगरीय जीवन की सामाजिक, आर्थिक, समस्याओं , पीडाओं, त्रासदियों, मनोव्यवस्थाओं, पाखण्ड, भ्रष्टाचार को उभारते हुए सामाजिक संकीर्णताओं की नकारते हुए शैलेश जी ने जीवन को अपनी समग्रता से रूपायित किया है और यथार्थता की सम्पूर्णता को स्वीकार कर अयथार्थ को अस्वीकार कर दिया। इनकी कहानियों में व्यक्तिगत परिवेश से लेकर सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक परिवेश का यथार्थ चित्रण हुआ है।

मनुष्य एक-दूसरे को पराधीन बनाने का, सुख भोगने का अभिलाषी है। उसकी अभिलाषा ने एक और वर्ण व्यवस्था को प्रतिष्ठित किया, तो दूसरी ओर उसने नारी को पुरूष के आधिन बनाकर स्त्रियों की सामाजिक स्थिति को अत्यन्त दयनीय भी बना दिया है, उनके साथ जो घिनौने अत्याचार किए जाते हैं, उनका कोई प्रतिकार नहीं होता। वह चुपचाप आँसुओं को पीकर रह जाती है उनका जीवन एक अभिशाप का जीवन बन गया है। शैलेश मटियानी जी नारी की इस दीन-हीन दशा का उत्तरदायी पुरूष की अन्यायी वृत्ति को ही मानते हैं। इन्होंने समाज में पतित समझी जानेवाली वेश्याओं में नारी-गरिमा का दर्शन किया है।

शैलेश मटियानी की कहानियाँ-मानव जीवन की कुंठाओं, भटकाव संत्रास, दिशाहीनता, यांत्रिक जडता का यथार्थ और मार्मिकता से चित्रण करती है। परिवेश, लांछनाओं, प्रताड़नाओं, चुनौतियों, कुत्सित प्रचार, षडयन्त्रों, परिवेश, प्रतिमाधरों के आक्रोशों, लोभी सामाजिक मान्यताओं, दुराचारियों के नारों, भाषणों

तथा सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक रूढ़ियों का खुलकर विरोध किया है। "अंधकार के आवरण को ओढकर प्रकाश की पावनता का ढिंढोरा पीट-पीटकर जीनेवाले निशाचरों के बीच सूर्य की तरह जीने का संकल्प सरस्वती पुत्रों में ही होता है।"[1]

शैलेश मटियानी जी ने अपने लेखन के संदर्भ में लिखा है कि बुभुक्षा, स्त्री और मौत इन तीनों की चूनौति से गुजरे बिना आदमी अपने आन्तरिक स्वरूप का साक्षात्कार शायद नहीं कर सकता। इन तीनों से गुजर कर भी जो मानवीय संवेदना और जिजीविषा आदमी की भीतर शेष रह जाए वही उसकी वास्तविक पूँजी होती है। इनकी अधिकांशः कृतियाँ आंचलिक हैं। 'अंचल' किसी निश्चित भू-भाग को कहते हैं। वहाँ के निवासियों के रहन-सहन, वेशभूषा, रीति-रिवाज तथा लोक संस्कृति का दर्शन उस आंचलित रचना में होता है।

लेखक के पक्ष में अभिव्यक्ति की भाषा से तात्पर्य कोरे शब्दाडम्बर से नहीं है, अपितु लेखक की भाषा अनुभवों की संवेदना और उसके चैतन्य के बीच का सेतु हैं। यह कहना अप्रासंगिक इसलिए नहीं लग रहा है कि, यही वह माध्यम हैं जिसके द्वारा कोई लेखक प्रकृति और परमात्मा अथवा पदार्थ और सत्ता के बीच की मनुष्य की भूमिका को साहित्य में बदलता है। शैलेश जी ने लेखक की हैसियत से है कि, "गहराई से देखें तो लेखक के पास सामान्य आदमी की अपेक्षा यह भाषा चेतना भावनाओं की अतिरिक्त करने की नहीं अनुभव करने की भी प्रेरणा देती है,. अंधेरे में भी आलोक अनुभव करने की प्रेरणा। सामान्य व्यक्ति भाषा के माध्यम का उपयोग सिर्फ अभिव्यक्ति के करने तक सीमित रहता है किन्तु लेखक के होने की शुरूआत ही भाषा के अनुभव के लिए होने की प्रतीति में से होती है। इसी प्रतीति के सहारे वह अपने अनुभव संसार में सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा ज्यादा लम्बी यात्राएँ करता है और अपने आपको अभिव्यक्त करने के लिए अपने भीतर से, सामान्य आदमी की अपेक्षा ज्यादा संकुचित, संश्लिष्ट और संवेद्य अनुभवों के साथ लाता है।"[2]

समकालीन राजनीतिक परिवेश को उजागर करते हुए मटियानी ने समाज की उपेक्षा को लेकर जीनेवाले वर्ग को जो वर्तमान राजनीति से अनभिज्ञ था| दशा बताने का सार्थक किया है||

दलित की वर्गीय स्थिति

निम्न उपेक्षित वर्ग शैलेश मटियानी की कहानियों में हमेशा मुख्य स्थान पर दिखाई देता है। इनके हद्य में लापरवाह से दिखनेवाले इन लोगों में जीवन के प्रति अथाह आस्था है। व्यक्तिगत स्वार्थ-एक निजी बेहतरी की चाह एक सीमा से आगे नहीं बढती। अपने जैसे जरूरतमंद और बड़ी पीडा से गुजर रहे लोग एक-दूसरे में अपने को देखने लगते हैं। तो सहस्तित्व की एक मिसाल सी कायम होने लगती है। शैलेश मटियानी जी ने इन निम्नवर्ग के लोगों के विषय में कहा है कि, अनैतिक कहे जानेवाले कार्यों में उनका लिप्त होना, कानून की भाषा में अवैध और असभ्य भले कहलाता हो, उनके सामने जो हालात रख दिए गए हैं, उनमें उनके लिए ऐसा करना अस्वाभाविक नहीं, क्योंकि उनके सामने विकल्प बचे ही नहीं है। उनकी ऐसी लिप्तता किसी भी तरह एक व्यवस्थित जिन्दगी पा लेने की सोच का हिस्सा है। 'रहमतुल्ला', 'भविष्य', 'मिट्टी', 'प्यास', 'वृत्ति', 'चील', 'ब्रह्मसंकल्प', 'दुरगुली' जैसी जाने कितनी कहानियाँ हैं जो तथाकथित सामान्य सभ्य जिन्दगी के समानान्तर उससे होड लेती हैं। मानवीय मूल्यों को अछूता के दर्शन कराती है।

मटियानी जी की पहाडी जीवन की कुछ कहानियाँ ऐसी है जिनमें इन्होंने लगातार बहते हुए और बदलते हुए वक्त को पकडने, व्याख्यायित करने की कोशिश की है। इनमें बदले हुए सामाजिक सम्बन्धों और दबे-कुचले इंसान के भीतर उग रहे एक नए स्वाभिमानी चेहरे की कहानियाँ कही ज्यादा देने योग्य है। इनकी नंगा घुघुतियाँ, त्योहार ऐसी ही कहानियाँ हैं जिसमे कभी कोई असहाय रेवती या छोटी जाति का कोई देवराम सच कहने पर उतारू हो जाता है, तो बड़े-बड़े प्रभुओं के चेहरों पर स्वाही पुत जाती है। घुघुतिया, त्योहार का

ठाकुर सोचता है कि देवराम तो कुछ भी कहलवाया जा सकता है, लेकिन उधर उसके अंदर इन लोगों के प्रति आक्रोष उत्पन्न होता हैं।

मटियानी जी की आँख जब यथार्थ को भेदती है तो वह खाली वर्तमान को ही नहीं उसके आर-पार भी बहुत कुछ देख लेती है। कथाकार शैलेश मटियानी जी ने इलाहाबाद नगर के मुहल्लों में निवास करनेवाले पिछडे, मध्यम एवं निम्न वर्ग के लोगों के विषय में कहानियाँ लिखकर उनकी मूल संवेदना को उभारा है। 'मैमूद' कहानी में एक निम्नवर्गीय मुसलमान परिवार के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन को चित्रित करने में कथाकार को पूर्ण सफलता मिली है। 'उठाईगीर' कहानी में रिक्षा चालक एवं बेसहारा लोगों के सामाजिक जीवन अभिव्यक्ति देती है। इन्होंने निम्नवर्ग के लोगों की सामाजिक स्थिति को दर्शाते हुए लिखा है कि हर फूल महकना चाहता है, हर इंसान जीना चहाता है, हर जिन्दगी मुस्काराना, मटकना चाहती है।

दलित नारी जीवन का यर्थाथ बोध

हमारे जीवन में स्त्री को भोग-वासना की निगाह से ही देखा जाने लगा है और उसके शरीर के साथ-साथ उसकी भावनाओं को भी कुचला जा रहा है। जिस तरह से कवियों ने अपने काव्यों में स्त्री के शोषण को उद्धृत किया है उसी तरह शैलेश जी ने भी अपनी कहानियों और उपन्यासों में स्त्री के शोषण का चित्रण किया हैं। स्त्री को हमेशा तिरस्कार अपमान आदि का सामना करना पडता हैं। यहाँ तक की इनकी कहानियों की स्त्रियाँ स्वयं अपने पति व परिवार के हाथों शोषण की शिकार हुई हैं। इनकी कहानियाँ कल्पना पर आधारित न होकर जीवन की सच्चाई से जुडी हैं। स्त्री के इस जीवन की सच्चाई को तो हम स्वयं भी टेलीविजन समाज के अन्य वर्गो के साथ-साथ समाचार पत्रों आदि पर देखते हैं। शैलेश जी ने शोषित वर्गों का भी अध्ययन किया हैं क्योंकि अधिकांशतः कवि एवं लेखक पूँजीपतियों, धनिकों एवं सम्पन्न वर्ग के लोगों का ही चित्रण करते हैं। इन गरीब और शोषित लोगों को अनदेखा कर देते हैं लेकिन यह एक ऐसे कथाकार है जिन्हांने इन पूँजीवाद, धनिक, उच्चवर्ग की कटु आलोचना करते हुए इन्हें गरीब, बेसहारा, मजबूर लोगों का खून चूसने वाला बताया है। स्त्री का शोषण करने में यही लोग आगे रहते हैं क्योंकि यह लोग स्त्री के काम करने की कीमत कम उसके शरीर से अपनी वासना की तृप्ति हेतु अत्याधिक पैसा देते हैं। एक मजबूर और लाचार जबतक अपनी इज्जत बचा पाती हैं तबतक बचाने की कोशिश करती है, क्योंकि गरीबों के लिए इनकी इज्जत ही प्यारी होती है। इन्होंने अपनी अधिकांश कहानियों में स्त्री को समाज के द्वारा किये जानेवाले शोषण को दर्शाया है। 'नंगा' कहानी में ठाकुर गुमान सिंह रेवती के साथ शारिरीक संबंध बनाता हैं किन्तु जब उन दोनों को बच्चा होने की नौबत आ जाती है तो उसे नदी में बहा देना चाहता है। तब रेवती कहती है कि, ''खबरदार ठाकुर, बच्चा बिना बाप का जरूर रहेगा, मगर इसे मारने नहीं दूंगी। नहीं लौटाओगे मेरे बच्चा, तो नीचे जाकर सारी बिरादरी को जगा दूंगी कि ठाकुर मेरा बच्चा नदी में बहा रहे।.....जाओ गुंसाई, ठकुराई इस अभागिनी के बच्चे पर क्यों उतार रहे?''[3] इस तरह उच्चवर्ण द्वारा दलित स्त्रियों पर किये जानेवाले अन्याय को मटियानी जी ने अपने कहानी में वाणी दी है।

स्त्री सामाजिक बंधनो में बँधी हुई है। इन्हीं सामाजिक बन्धनों के कारण अधिकांशतः शोषण का शिकार होना पडता है। शोषित होकर भी यह अपनी आवाज बुलन्द नहीं कर सकती है। वैसे तो नारी को अपराजिता समझा जाता है। लेकिन आजकल ऐसा सम्भव हो जाना मुश्किल हो गया है। शैलेश जी की कहानियाँ स्त्री के ऐसे शोषण को चित्रित करती है जिसको पढ़ने के बाद आन्तरात्मा काँप उठती है कि जहाँ स्त्री पुरूष को सही राह दिखाती है वह पुरूष की जीवन रूपी नौका को खेमे तथा सही दिशा बताने के लिए पतवार का काम करती है वही इन पुरूषों के हाथ की कटपुतली बन कर रह गई है जिसको यह लोग जहाँ चाहे, जब चाहे नचाते हैं। इन लोगों की शैलेश जी ने कटु आलोचना की है।

निष्कर्ष :

शैलेश जी ने लिखा है कि-''पवनपुत्र, कमाठीपुरा, गोलपीठा और पिल हाउस-महानगरी बम्बई के ये चार तीर्थ, जहाँ दक्षिणा की रक्कम के हिसाब से स्त्रियों की बेटियाँ बिकती है। बेटियाँ जिनमें पनपती हुई इन्सानियत अठन्नी-रूपल्ली के सिक्कों के नीचे भारत हो जाती है।.. और मैंने जायजा लिया है ऐसी बेटियों का और उस जायजे से तिलमिला जब-जब लौटा मेरी अँगुलियाँ अपनी छाप छोडने के लिए छटपटा उठी है।''

इनकी कहानी की प्रमुख विशेषता यह है कि यह जो कुछ समाज में देखते रहे उसे पुनः जीवित कर रचनाओं में अंकित कर पाठक के समक्ष लाने की कोशिश करते रहे, ताकि पाठक पढकर उस दर्द को महसूस करें। जैसे-वेश्याओं की बेटियों का जायजा-मजबूर इन्सानियत की बेटियों का जायजा, इनके मन मस्तिष्क में बैठता चला गया था, जज्ब होता चला गया था और यह बेचैन रहते थे, कि मैं उन बेटियों का वह जायजा दूसरों तक नहीं पहुँचा पा रहा हूँ जिसे बेनजीर जायजे ने रात-रात भर मेरी फटी झँगुली वाली बहन, रोजी-रोटी की व्यवस्था न हो पाने पर किशोरावस्था में ही जोगी बन जानेवाले मेरे भाई के चेहरे को मेरी आँखों में उतारा है।

यह गहराई और गम्भीरता के साथ बम्बई की फुटपाथों के पुरूषों और कमाठीपुरा के कोठों की औरतों के जीवन सन्दभों को एक ऐसे नववर्ष की तरह उभारना चाहते थे कि -'भारत माता की जै' बोलते समय हमारी सरकारी नेताओं की जीभों पर जय-जयकार बबूल के काँटों के गुच्छे की तरह उभर आए और भारत माता की अशोक चक्रमार्का अठन्नी और रूपये की आकार की लाखों बेटियाँ उनकी रामराज्यवादी आँखों के मोटे शीशे पर पहाडी ख्योतार (गुलेल) से छुटनेवाले पत्थर के गोलों की तरह बरसने लगे- लेकिन ऐसी कृति नहीं आ पाई। ऐसी एक कृति लिख पाने, ऐसा एक नक्षा उभार पाने का सपना इनका अधूरा ही रहा गया है।

शैलेश मटियानी की संघर्ष-यात्रा को समझे बिना उनके कृतित्व और कृतित्व में निहित भाषा को समझना कठिन होगा। शैलेश की कहानियों में जो दर्द है, पीड़ा है, मानवीय यातना और उसकी यंत्रणाओं से गुजरने की जो जद्दोजहद है, जो मानवीय-संस्पर्श है, जो मानवीय महक और धरती की गमक है उसे आत्मसात करने के लिए उनकी जीवन-यात्रा के संघर्ष से रू-ब-रू होना ही होगा। मटियानीजी का जीवन संघर्ष की एक अनवरत यात्रा है। यह जो शब्दों की खेती वह कर सके हैं, उनके बीज उनकी अनथक जीवन-यात्रा से निष्पन्न हुए है।

संदर्भ:

1. शैलेश मटियानी-एक मंगल दीप और, पृ. 13
2. शैलेश मटियानी-लेखक की हौसियत से, पृ. 13-14
3. डॉ. हेमंत सोनाले - शैलेश मटियानी के उपन्यास: परिवेश और रचना संसार, पृ. 121
4. शैलेश मटियानी-शैलेश मटियानी की सम्पूर्ण कहानियाँ भाग 3, पृ. 237